अध्याय – प्रथम

शोध परिचय

1.1 प्रस्तावना

1.2 समस्या कथन

1.3 समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दों की परिभाषा एवं व्याख्या

1.4 शोध के उद्देश्य

1.5 शोध का परिसीमन

1.6 शोध परीकल्पनाएं

1.7 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

अध्याय - 1

शोध परिचय

1.1 प्रस्तवना :

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना है।जिसमे शारीरिक मानसिक ,सामाजिक, आध्यात्मिक , भावनात्मक विकास होता है ! व्यवसाय के लिए योग्यताएं एवं क्षमता वाले व्यक्तियों की आवश्यकता होती है जो कि विभिन्न व्यवसायो को अपनाने के लिए विद्यार्थियों की आकांक्षा जानना आवश्यक है जिसे जानकर उन्हें विशेष व्यवसाय की प्राप्ति की दिशा में निर्देशन एवं सहयोग दे सकते हैं।

भारत में वर्तमान स्थिति में जनसंख्या विस्फोट, बेरोजगारी जैसे जटिल समस्याओं का सामना कर रहा है ! शिक्षा संस्थानों को यह जिम्मेदारी दी गई है कि वह विद्यार्थियों में व्यवसायिक व्यवहार को विकसित करें, जिससे कि इन समस्याओं का हल किया जा सके प्रचलित शिक्षा तंत्र को समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहिए।

शिक्षा को समाज में एक संस्था इसलिए बनाया गया है, ताकि व्यवहार के विकास को बढ़ा सके। समाज में कई संस्थाओं के शैक्षिक कार्य हैं। पर शिक्षण संस्था समाज में साधन के रूप में ज्ञान का उपयोग करके इसके सदस्यों के विकास को आगे बढ़ाती है।

आधुनिक शिक्षा व्यक्ति की योग्यता पर निर्भर करती है। शिक्षा समाज के सदस्यों में सुधार लाने का साधन है। यह सुधार शिक्षक द्वारा लाया जाता है। शिक्षक उचित वातावरण निर्माण के द्वारा व्यक्ति,समाज की आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा प्रक्रिया की व्यवस्था करने के लिए जिम्मेदार होता है ! शिक्षक की यह जिम्मेदारी होती है, कि वह व्यक्ति की योग्यताओं को प्राप्त करने योग्य बनाए

जिससे मैं समाज का उपयोगी सदस्य बन सके। समाज का उपयोगी सदस्य बनने का तरीका आत्मानुभूति है। आत्मानुभूति के लिए कार्य करना आवश्यक है, जो किसी उपयुक्त व्यवसाय के चयन द्वारा होता है। सही व्यवसाय चयन व्यक्ति एवं समाज दोनों को संतोष प्रदान करता है।

व्यक्ति के जीवन में व्यवसाय का मनोवैज्ञानिक महत्व है। जब विद्यार्थी शिक्षण संस्थानों को छोड़कर बाहरी दुनिया में प्रवेश करता है तो उसे व्यवसाय संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। विद्यार्थियों के व्यवसायिक चयन प्रशिक्षण, सामाजिक, व्यक्ति, कारकों का प्रभाव पड़ता है । प्रत्येक समाज में शैक्षिक तंत्र सभी विद्यार्थियों के शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। ऐसे मंत्र को बनाने व कार्यान्वित करने से पहले विद्यार्थियों की आवश्यकता को स्वतंत्रता से सतर्कता से मापना चाहिए।

मानव प्रतिभा देश का महत्वपूर्ण संसाधन है। इसका संरक्षण एवं विकास प्रत्येक के लिए प्राथमिक कार्य होना चाहिए। जब मानव प्रतिभा व्यर्थ जाती है, तो प्रत्येक व्यक्ति उससे वंचित होता है और जब यह सही प्रकार से विकसित होती है तो प्रत्येक को लाभ होता है।

व्यवसाय चयन व्यवसायिक विकास का एक पक्ष है। व्यवसायिक चयन एक प्रक्रिया है ,ना की एक घटना है। विद्यार्थियों के व्यवसायिक विकास के अनेक कारक हैं जिसमें से दोप्रमुख कारक है, वास्तविक एवं प्रत्यक्षीकृत.। वास्तविक कारक साधारण भौतिक संसाधनों से संबंधित है, जबकि प्रत्यक्षीकृत कारक सामान्य व्यक्ति के सकारात्मक एवं नकारात्मक वातावरण से संबंधित है !

भारतीय परिप्रेक्ष्य में ' व्यावसायिक चयन ' अब नितांत जटिल एवं चुनौतीपूर्ण प्रक्रिया बन गई है इसके कई कारण है। हमारी विकास योजनाओं की क्रिया वर्णन नीतियों में बुनियादी तौर पर कमजोरी होने के साथ हमारी शिक्षा व्यवस्थाओं के कलेवर एवं उनसे जुड़े परिप्रेक्ष्य द्वारा भारतीय संस्कृति की पहचान

बनाए रखने वाले मूल्यों पर आधारित व्यवसाय इन मुख दृष्टि एवं अपेक्षित कुशलता का नहीं विकसित हो पाना कतीपय सुविदित समस्याएं हैं जिनकी और राष्ट्रीय स्तर की शीर्ष संस्थाओं का ध्यान भी केंद्रित हो रहा है ।

व्यवसायों का चुनाव कई तत्वों पर निर्भर करता है! यह स्मरण रखना होगा कि जैसे-जैसे सामाजिक व्यवस्था बदलती गई तथा उसकी संरचना में जटिलता आती गई , गतिशील समाज की संरचना में व्यक्ति में व्यक्ति द्वारा अपने व्यवसाय कि चुन्नी की प्रक्रिया में भी तब्दील होती गई। भारतीय समाज में यह विशेषता रही है कि पिता के व्यवसाय के आधार पर पुत्र अपने व्यवसाय का चुनाव कराया करता रहा है। किंतु विगत 50 वर्षों में इस दृष्टि से भारी सामाजिक परिवर्तन दिखाई पड़ता है। अब पूरे सामाजिक एवं व्यवसायिक पर्यावरण का जादुई प्रभाव व्यक्ति की आकांक्षा एवं उसके प्रेणास्रोतों को तुरंत बदल देता है।

वर्तमान स्थिति मैं विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि जानकर उसके अनुसार उन्हें शिक्षा प्रदान करना अत्यंत आवश्यक है। देश का विकास उसकी आर्थिक संपन्नता पर निर्भर होता है और देश को आर्थिक शक्ति बनाने के लिए वह धरोहर जिनके हाथों में हैं उन्हें पूरिपूर्ण शिक्षा देकर राष्ट्र की उन्नति करवा सकते है ! जापान जोकि द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात अपना अस्तित्व खो चुका था, उसने सही प्राविधिक एवं व्यवसायिक शिक्षा का उत्कृष्ट संयोजन कर आज अपनी छाप दुनिया भर में छोड़ी है।

द्वितीय विश्व युद्ध में जर्मनी तथा जापान को जर्जर बनाकर उनकी अर्थव्यवस्था को तहस-नहस कर दिया था, और उन्होंने प्राविधिक एवं व्यवसायिक शिक्षा केविकास हेतु जो कदम उठाएं उसी के कारण आज इन दोनों की स्थिति सुदृढ़ तथा सम्मानजनक बनी है ! आज हमारे देश को ऐसे ही प्रयास की आवश्यकता है , कि व्यवसाय शिक्षा को आगे बढ़ाने हेतु संपूर्ण प्रयास किए जाएं केवल कागजी कार्रवाई से काम नहीं चलेगा बल्कि इसको हमें कार्यान्वित करना होगा ।

अतः जीवन में व्यवसाय बचयन का महत्वपूर्ण स्थान है ! विद्यार्थियों की व्यवसायिक एक रुचि जानकर उन्हें रुचि अनुसार शिक्षा सुविधा देना कि वर्तमान की जरूरत है ।

1.2 समस्या कथन –

"नवमी एवं दसवीं कक्षाके छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा व्यवसायिक रुचि का तुलनात्मक अध्ययन। "

1.3 समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दों की परिभाषा एवं व्याख्या –

1. नौंवी एवं दशवीं कक्षा के छात्र –छात्राये –

प्रस्तुत अध्याय में उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं से आशय है जो विद्यार्थी अपनी 8 कक्षा तक की बुनियादी शिक्षा पूर्ण कर चुके हैं और अपने भविष्य के प्रति सजग है । आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए स्वच्छता की ओर अपने कदम बढ़ा रहे हैं|

2. शैक्षिक उपलब्धि –

शैक्षिक उपलब्धि आशय से प्राप्त ज्ञान या शालेय विषयों में विकसित प्रवीणता या कुशलता से है ! जो सामान्यता परीक्षणों में प्राप्त अंकों द्वारा या शिक्षक द्वारा दिए गए अंकों द्वारा निश्चित की जाती है तथा शैक्षिक उपलब्धि के मापन का मुख्य उद्देश्य यह है कि छात्र ने अंश तक विद्यालय द्वारा निश्चित किए गए उद्देश्यों को प्राप्त कर लिया है की जानकारी देना है ।

3. व्यावसायिक रुचि –

व्यवसाय का मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। व्यवसाय मानव को जीवन यापन का साथ ही नहीं प्रदान करता अपितु उचित व्यवसाय में स्थान मिलने पर मानव को आत्म संतुष्टि प्राप्त होती है। आत्म बल मनोविज्ञान तथा आत्मनिर्भरता की दृष्टि से व्यवसायिक रुचि उसकी स्वयं को या किसी अन्य स्रोत स्रोत के माध्यम से व्यक्त किया गया सकारात्मक दृष्टिकोण है।

विशेष रूचि का तात्पर्य व्यक्ति की किसी विशेष प्रकार की व्यवसाय के प्रति अभिज्ञासा से है !

1.4 शोध के उद्देश्य –

प्रस्तुत शोध कार्य के उद्देश्य निम्नलिखित थे -

1. नौवीं एवं दसवीं कक्षा के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का अनुमापन करना ।

2. नौंवी एवं दशवीं कक्षाके छात्राओं के शैक्षणिक उपलब्धि का अनुमापन करना।

3. नौंवी एवं दशवीं कक्षा के छात्रों व्यावसायिक रुचि का अनुमापन करना ।

4. नौंवी एवं दशवीं के छात्राओं की व्यवसायिक रुचि का आनुमापन करना ।

5. नौंवी एवं दशवीं के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में तुलना करना ।

6. नौवीं एवं दशवीं के छात्र-छात्राओं की व्यवस्था एक रूचि की तुलना करना।

1.5 शोध का परिसीमन –

- ❖ प्रस्तुत शोध मध्यप्रेदश के भोपाल शहर तक सीमित था ।
- ❖ प्रस्तुत शोध भोपाल शहर के तीन विद्यालयों तक सीमित था।
- ❖ प्रस्तुत शोध नौवीं –दशवीं कक्षा के छात्रों तक सीमित था !

1.6 शोध परिकल्पनाएं –

प्रस्तुत शोध में निम्नवत परिकल्पनाओं का निर्माण तथा परीक्षण किया गया था ।

1. नौंवी एवं दशवीं कक्षा के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यावसायिक रूचि के मध्य कोई सहसम्बन्ध नही होगा !

2. नौंवी एवं दशवीं कक्षाके छात्र एवं छत्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अंतर नही होगा ।

3. नौवीं एवं दशवीं कक्षा के छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक रुचि के मध्य सार्थक अन्तर नही होगा ।

1.7 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व –

विद्यार्थियों की विभिन्न रुचियों में व्यावसायिक रूचि अपना विशिष्ट स्थान रखती है । उचित व्य व्यावसायिकर रुचि व्यक्ति के जीवन को संवार सकती है ।जबकि आधारहीन व्यवसाय को दुखी व्यक्ति के उन्नति में बाधक बन

सकती है ! व्यवसाय को दुखियों के निर्माण और उनके चरण में शिक्षा व्यवस्था का प्रमुख उत्तरदायित्व होता है !

इन विरोधियों के निर्माण में वातावरण भी अपनी भूमिका निभाता है यदि व्यक्ति की व्यवस्थाएं क्यों का का सही रूप में आकलन किया जाए तो उसी के अनुरूप शिक्षा आयोजन किया जा सकता है आवश्यकता होने पर शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन किया जा सकता है !

विद्यार्थियों को उनकी कृतियों केपर भविष्य में व्यवसाय के लिए उचित परामर्श दिया जा सकता है।

व्यक्ति को व्यवसायिक मार्गदर्शन के माध्यम से उनकी क्षमता के अनुसार कार्य करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

नौंवी एवं दशवीं कक्षा के छात्र छात्राओं की व्यवस्था एक रुचियां जानना अत्यंत आवश्यक है इससे विद्यार्थी अपने भविष्य के प्रति कितने जागरूक हैं? उन्हें भविष्य में आने वाली व्यवसाई का स्वरूप की कितनी

जानकारी है एवं उनकी व्यवस्था एक रुचियां कौन सी है? यह जानकर उन्हें उचित शिक्षा प्रदान कर सकते हैं।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारत के संपूर्ण सामाजिक एवं आर्थिक विकास के लिए व्यवसायिक शिक्षा शिक्षा का एक आवश्यक अंग है। जिसके द्वारा हम विश्व के आर्थिक क्षेत्र में तथा विभिन्न महत्वपूर्ण क्षेत्र में अपना प्रथम स्थान प्राप्त कर सकते हैं। इसके साथ यह जानना भी आवश्यक है कि छात्र-छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धियां क्या है। क्या उसकी व्यवसायिक सूचियों में कोई अंतर होता है? शैक्षणिक उपलब्धियों के साथ व्यवसायिक रूचि मंत्र आता है।

उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए कैसे शोध कार्य की आवश्यकता हुई जिसमें छात्र-छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि तथा व्यवसायिक रुचि का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए।